Psychology DII (Hons.)
Lecture No - 20

Date 27.4.20

Dr. (Mrs) Kumari Kavita
Associate Professor
Marwari College, Darbhanga

Topic — Symptoms of Schizophrenia

4) भाषा दोष (Speech disorder) :— इनके रोगी में भाषा दोष भी पाए जाते हैं। अधिकांश रोगी चुपचाप रहते हैं या उन्हें स्पष्ट रूप से बोलने में कठिनाई होती है। रोगी के वाक्य लम्बे और निरर्थक होते हैं। कभी-कभी ये इतने तेजी से बोलते हैं कि दूसरे लोग समझ भी नहीं पाते हैं। कभी-कभी ये चुप बोलकर अचानक चुप हो जाते हैं। रोगी को यह आशंका होती है कि उनके बोलने से उनके कारण सम्पूर्ण पर्यावरण दूषित न हो जाय। इसीतरह कभी-कभी उन्हें लगता है कि अगर वे बोलेंगे तो उनके शब्द इतने चुभते हुए होंगे कि अन्य लोग बुरा मान जाएंगे। इसतरह रोगी में अनेक भाषा दोष पाए जाते हैं।

5) Hallucination (विभ्रम) :— रोगियों में विभ्रम का लक्षण सबसे अधिक पाया जाता है। यह विभ्रम श्रवण, दृष्टि, घ्राण, स्पर्श आदि कई प्रकार के होते हैं। किन्तु रोगियों में श्रवण सम्बन्धी विभ्रम की प्रधानता अधिक रहती है। रोगी को ईश्वर या काल्पनिक व्यक्ति की आवाज सुनाई पड़ती है। कभी-कभी रोगी को दृश्य विभ्रम भी होते हैं। इसमें रोगी ईश्वर या परिवार के किसी मृत व्यक्ति का दर्शन करते हैं। रोगी को कभी-कभी स्पर्श सम्बन्धी विभ्रम का भी अनुभव

होता है। जिसमें रोगी को महसूस होता है कि उनके दुश्मन विष देकर उनकी हत्या करना चाहते हैं। इसीतरह स्वाद का विभ्रम होने पर रोगी को हर वस्तु का स्वाद विचित्र लगता है। तथा घ्राण सम्बन्धी विभ्रम में आसपास के किसी दुर्गन्ध या विचित्र सुगन्ध का विभ्रम होता है।

6) Writing Peculiarity (लेखन विलक्षणता) :— रोगी में लेखन विलक्षणता भी पाई जाती है। रोगी या तो लिखते ही नहीं हैं या अत्यधिक लिखते हैं। उनके लिखते समय सांकेतिक प्रतीकों, संख्याओं, शब्दों इत्यादि का प्रयोग मिले-जुले रूपों में जहां कहीं करते हैं। रोगी लिखते समय नये शब्दों का निर्माण भी करते हैं। जिसका कोई अर्थ नहीं होता है। इसतरह रोगी के लिखावट में विचित्रता के लक्षण देखने को मिलते हैं।

7) Behaviour disorder (व्यवहार विकृति) :— रोगी के व्यवहार में भी विकृति के लक्षण पाए जाते हैं। रोगी का व्यवहार सामाजिक प्रतिमान से भिन्न होता है। एक ही सांचे में ढला हुआ (Stereotyped) तथा आवेगशील (impulsive) होता है। कुछ रोगी की शारीरिक मुद्रा विचित्र होती है जैसे अकड़ा शरीर अकड़ा और तना हुआ रहना है। घंटों एक ही पैर पर खड़ा रहना, अजीब मुद्रा बनाए रखना, घंटों झुके रहना, एक ही मुद्रा में कई दिनों तक बैठे रहना, आदि।

8) Dissociated Personality (विघटित व्यक्तित्व) :— इसके रोगी का व्यक्तित्व विघटित

Notes

होता है। इनकी ज्ञानात्मक, क्रियात्मक, भावात्मक एवं मानसिक प्रक्रियाओं के बीच समन्वय या एकरूपता का अभाव रहता है। इसके कारण रोगी की सभी क्रियाएं असम्बद्ध होती है। किसी प्रियजन की मृत्यु का शोक मनाते-मनाते सहसा हंसने, नाचने और गाने लगता है।

Etiology (कारण)

Schizophrenia के कारणों के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिक एकमत नहीं है। कुछ मनोवैज्ञानिक वंश परम्परा को महत्व देते हैं तो कुछ मनोवैज्ञानिक सामाजिक कारणों को महत्वपूर्ण बतलाते हैं। यहां हम कुछ प्रमुख कारणों की चर्चा करेंगे :—

1) Heredity (वंश परम्परा) :— अनेक मनोवैज्ञानिक दूषित वातावरण को इसका कारण मानते हैं। जिन बच्चों के माता-पिता इस रोग से ग्रसित रहते हैं उनके बच्चों में भी इस रोग के होने की सम्भावना बहुत अधिक बढ़ जाती है। इस बात की पुष्टी Coleman, Heston आदि मनोवैज्ञानिकों ने की है। White ने Schizophrenia के रोगियों का अध्ययन कर कहा कि 90% इस रोग का कारण वंश परम्परा है। किन्तु वंश परम्परा को इस रोग का एकमात्र कारण मानना तो युक्तिसंगत नहीं है। इस रोग के और भी कई कारण हैं।

2) Central Nervous System (केन्द्रीय स्नायु मण्डल) :— कुछ विद्वानों ने इस रोग का कारण केन्द्रीय स्नायु मण्डल को माना है। अनेक अध्ययनों में सामान्य और Schizophrenia के रोगियों के मस्तिष्क का तुलनात्मक अध्ययन कर पाया कि दोनों के मस्तिष्क कोषों में कोई खास अन्तर नहीं होता है।

कुछ ने कहा कि दिल छोटा होना, नलिकाविहीन ग्रन्थियां आदि इसका कारण हैं। किन्तु इस सम्बन्ध में अभीतक कोई ठोस बात ज्ञात नहीं हो सका है।

3) Inferiority feeling (हीनभावना) :— Adler के इस रोग का मुख्य कारण हीनभावना माना है। उनके अनुसार आत्मसम्मान में धक्का लगने से व्यक्ति में हीनभावना का विकास होता है। उन्होंने कहा कि इसी हीनभावना के कारण व्यक्ति अपने वातावरण में समस्तापूर्वक अभियोजित नहीं कर पाता है। परिणाम-स्वरूप उसमें विभिन्न प्रकार के व्यामोह, भय, विभ्रम आदि के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। इसतरह Adler ने इस रोग का कारण हीनभावना को ही माना है।

4) Mental Conflict (मानसिक संघर्ष) :— फ्रायड ने मानसिक संघर्ष को इस रोग का कारण माना है। उनके अनुसार जब व्यक्ति की काम शक्ति की सन्तुष्टी नहीं होती तो व्यक्ति मानसिक संघर्ष से घिर जाता है जो इस रोग की उत्पत्ति का कारण बनता है।

5) Brain Trauma (मानसिक आघात) :— कुछ विद्वानों ने जन्म के समय लगे मानसिक आघात को इस रोग का कारण माना है। मस्तिष्क में किसी प्रकार के आघात के कारण मस्तिष्क की सभी क्रियाएं विकृत हो जाती हैं। इससे मस्तिष्क की बनावट भी दोषपूर्ण हो जाती है। इसतरह मस्तिष्क आघात का भी इस रोग की उत्पत्ति में हाथ रहता है।

6) Introvert Personality (अन्तर्मुखी व्यक्तित्व) :— कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि यह रोग अधिकतर अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति को

होता है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का व्यक्ति एकान्तप्रिय होता है वह अपनी काल्पनिक दुनिया में ही विचरण करना चाहता है उसकी कल्पनाएं वास्तविक जगत की चीजों से सम्बन्धित नहीं होती

7) Early traumatic experience (शैशवकालीन आघात):— कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस रोग का कारण शैशवकालीन आघात बताया है Wahl ने अपने अध्ययन में पाया कि इस रोग के रोगियों में 41% से 58% ऐसे रोगी थे जिनके माता-पिता की मृत्यु उनके बचपन में ही हो गई थी या वे तलाक के कारण अलग-अलग हो गए थे। ऐसे बच्चे अपने साथियों के बीच उपहास के केन्द्र होते हैं। जिसके फलस्वरूप बच्चे का व्यक्ति आन्तरिक कुण्ठा और संघर्ष से ग्रस्त हो जाता है। जो आगे चलकर इस रोग का लक्षण प्रकट करता है।

8) Regressive Pattern (प्रतिगामनात्मक स्वरूप):— Jung के अनुसार इस रोग का मुख्य कारण मनोग्रन्थियों का दमन और लैंगिक इच्छा का प्रतिगमन है। इसके रोगियों में बालमावस्था के समान ego से सम्बन्धित आवेगों की प्रधानता रहती है तथा रोगी का व्यवहार वास्तविकता से परे होता है। Jung ने कहा कि इस रोग का कारण बालमनस्था की ओर पलायन (flight into childhood) है।

9) Faulty Learning (दोषपूर्ण शिक्षण):— कुछ मनोवैज्ञानिकों ने दोषपूर्ण शिक्षण को इस रोग का कारण माना है। प्रत्येक बालक को अनेक ऐसी अनुक्रियाएं (Responses)

Notes

सीखनी होती है, जो बच्चे होने पर सामान्य समायोजन के योग्य होती है, लेकिन त्रुटिपूर्ण पारिवारिक और सामाजिक वातावरण के कारण कुछ बच्चे सही प्रतिक्रिया करना नहीं सीख पाते हैं, जिसके फलस्वरूप उनमें अति-योजन योग्य अनुक्रियाओं का विकास नहीं हो पाता है।

10) Social and Cultural factors (सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव) :— हॉलिंगशेड तथा रेडलीक के अनुसार यह रोग अपेक्षाकृत निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के व्यक्तियों में अधिक होता है। उसीतरह Karen Horney ने इस रोग का कारण सामाजिक असमायोजन माना है। Otto Rank ने व्यक्तित्व स्त्रीत्व प्रवृत्ति तथा पुरुषत्व प्रवृत्ति के बीच द्वन्द्व को इस रोग का आधार बताया है।

Treatment :—

प्रारम्भ में इस रोग को असाध्य रोग समझा जाता था। किन्तु आजकल इसका उपचार सम्भव हो गया है। वर्तमान समय में इस रोग के उपचार के लिए मुख्यतः आघात चिकित्सा (Shock therapy) शल्य चिकित्सा (Surgery), Insulin, व्यावसायिक चिकित्सा (Occupational therapy) आदि का उपयोग किया जाता है। पर्यावरण में समुचित परिवर्तन लाने तथा रोगियों के प्रति सहानुभूति और मानवीय व्यवहार प्रदर्शित करने से भी इसके उपचार में सहायता मिलती है।

कुमारी कविता
मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा